प्रकृति महाकुंभ

वानिकी एवं पर्यावरण चेतना शिविर

तीर्थराज नाम से प्रतिष्ठित भारतीय संस्कृति और आध्यात्म के केन्द्र प्रयागराज (पूर्व में इलाहाबाद) नगर में 13 जनवरी से 26 फरवरी 2025 के मध्य विश्व के सबसे बड़े समागम महाकुंभ–2025 का आयोजन हो रहा है। गंगा, यमुना और अदृश्य सरस्वती नदियों के पवित्र संगम पर 12 वर्षों के अन्तराल पर लगने वाला महाकुंभ मेला न केवल धार्मिक और आध्यात्मिक महत्व रखता है, अपितु यह एक सांस्कृतिक और सामाजिक आयोजन भी है, जो विभिन्न समुदायों और देशों के लोगों को एक साथ लाता है। महाकुंभ–2025 के अन्तर्गत मेला क्षेत्र 4000 हेक्टेयर के क्षेत्र में फैला है, जिसमें देश–विदेश से लगभग 55 करोड़ आगन्तुकों के आने की सम्भावना है। इसी क्रम में यह समाज में पर्यावरणीय मूल्यों के प्रति जागरूकता एवं वानिकी प्रसार का अप्रतिम अवसर बनाता है।

इस दिशा में भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून (पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार) द्वारा मेला क्षेत्र में **''प्रकृति कुंभ–पर्यावरण एवं वानिकी चेतना शिविर''** स्थापित किया गया है। आयोजित शिविर में परिषद द्वारा वानिकी अनुसंधान के क्षेत्र में विकसित की गयी तकनीकों के प्रदर्शन के साथ–साथ पर्यावरण संरक्षण की जागरूकता हेतु विभिन्न कार्यक्रम जनमानस की भागीदारी के साथ सुनिश्चित किये गये हैं–

- वानिकी एवं पर्यावरण प्रदर्शनी
- वृक्ष उत्पादन एवं हरित क्षेत्र वृद्धि हेतु प्रशिक्षण एवं कार्यशालाएं
- सांस्कृतिक चेतना एवं प्रसार कार्यक्रमों द्वारा पर्यावरण जागरूकता
- कृषक/आगन्तुक-वैज्ञानिक संवाद
- पर्यावरण प्रतिज्ञा एवं हस्ताक्षर अभियान
- क्विज प्रतियोगिता तथा नुक्कड़ नाटक आदि
- विभिन्न हितधारकों हेतु वानिकी की विभिन्न विधाओं पर चलचित्र (फिल्म) का प्रसारण
- परिषद के प्रकाशन, उन्नत पौध एवं बीज विक्रय

भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून

(पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार)

भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून

भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद्, देहरादून भारत सरकार के पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, नई दिल्ली के अन्तर्गत एक स्वायत्त संस्था है, जिसकी स्थापना वानिकी क्षेत्र में अनुसंधान और शिक्षा को व्यवस्थित, निर्देशित तथा प्रबंधित करने के उद्देश्य से वर्ष 1986 में की गयी। परिषद का कार्य वानिकी अनुसंधान करने के साथ ही विकसित तकनीकों का भारत के राज्यों और अन्य उपयोगकर्ता एजेंसियों को हस्तांतरित करना और वानिकी शिक्षा प्रदान करना है। विभिन्न जैव–भौगोलिक क्षेत्रों की अनुसंधान आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए परिषद के अन्तर्गत 9 अनुसंधान संस्थान तथा 5 उन्नत केन्द्र हैं।

अनुसंधान परिप्रेक्ष्य

- प्राकृतिक वन पारिस्थितिकी तंत्र का संरक्षण, सुरक्षा, पुनर्जनन, पुनर्वास एवं सतत विकास
- बंजर, बेकार, सीमांत और खनन भूमि पर पुनः वनरोपण करना
- वृक्ष सुधार पर अनुसंधान
- वैज्ञानिक एवं तकनीकी विधियों के अनुप्रयोग द्वारा प्रति इकाई क्षेत्र प्रति इकाई समय में काष्ठ एवं गैर–काष्ठ वन उपज की उत्पादकता में वृद्धि करना
- मूल्य संवर्धन और रोजगार सृजन के लिए वन उपज के बेहतर उपयोग, पुनर्प्राप्ति और प्रसंस्करण पर अनुसंधान
- सभी नाजुक पारिस्थितिक तंत्रों जैसे पर्वत, मैं ग्रोव, रेगिस्तान आदि का पारिस्थितिक पुनर्वास
- वन प्रबन्धन में लोगों की भागीदारी को आकर्षित करने की दिशा में रणनीति विकसित करने के लिए सामाजिक–आर्थिक और नीति अनुसंधान

भा.वा.अ.शि.प.-पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केन्द्र, प्रयागराज

वर्ष 1992 में स्थापित भा.वा.अ.शि.प.–पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केन्द्र, प्रयागराज वानिकी अनुसंधान एवं विस्तार में अग्रणी केन्द्र है। केन्द्र का मुख्य उद्देश्य कृषिवानिकी एवं पारिस्थितिक पुनर्स्थापन क्षेत्र में व्यावसायिक उत्कृष्टता को समृद्ध करना है। केन्द्र का कार्यक्षेत्र पूर्वी उत्तर प्रदेश के तीन कृषि जलवायु क्षेत्र (मध्य गंगा के मैदान, ऊपरी गंगा के मैदान तथा मध्य पठार व पहाड़ियां) हैं। केन्द्र की अनुसंधान सम्बन्धी गतिविधियां अवक्रमित पारिस्थितिक प्रणालियों, क्षतिग्रस्त स्थलों के पुनर्वास तथा कृषिवानिकी को प्रोत्साहन देने के साथ ही वन संसाधनों के संरक्षण व सदुपयोग हेतु उपभोक्ता समूहों को सुलभ तकनीकी सहयोग प्रदान करना है। केन्द्र द्वारा अनुसंधान के अतिरिक्त विभिन्न हितधारकों के लिए वानिकी विस्तार, तकनीकी प्रदर्शन तथा क्षमता निर्माण प्रयासों में महत्वपूर्ण योगदान दिया गया है। यह केन्द्र राज्य वन विभाग, किसान, वृक्ष उत्पादक, छात्र, गैरसरकारी संगठन, उद्यमी तथा वन आधारित उद्योगों आदि के सहयोग से सम्पन्न करताहै।

संकल्पना

"वन पारिस्थितिक तंत्रों के संरक्षण और वैज्ञानिक प्रबंधन के माध्यम से दीर्घकालीन पारिस्थितिक स्थिरता, संवहनीय विकास तथा आर्थिक सुरक्षा प्राप्त करना"

लक्ष्य

"वानिकी अनुसंधान और शिक्षा के माध्यम से पारिस्थितिक सुरक्षा, बेहतर उत्पादकता, आजीविका संवर्धन और वन संसाधनों के संवहनीय उपयोग हेतु वैज्ञानिक ज्ञान और प्रौद्योगिकियों को सृजित, उन्नत और प्रसारित करना।"

अनुसंधान

- आजीविका समर्थन एवं आर्थिक वृद्धि हेतु वन तथा वन उत्पादन प्रबंधन
- वन एवं जलवायु परिवर्तन
- जैवविविधता संरक्षण एवं पारिस्थितिक सुरक्षा
- वन आनुवंशिक संसाधन प्रबंधन एवं वृक्ष सुधार

शिक्षा एवं विस्तार

- उभरती चुनौतियों का सामना करने के लिए वानिकी शिक्षा एवं नीति अनुसंधान
- अनुसंधान को जनता तक ले जाने के लिए वानिकी विस्तार

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश
सेक्टर नं. 1, परेड ग्राउण्ड (गंगा पंडाल के समीप), प्रयागराज